मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

मई 2012 वर्ष 17, अंक 5

जन्मदिन, 22 मई पर विशेष

राजा राममोहन राय और शिक्षा

18वीं सदी के अंतिम दशक में राजा राममोहन राय एक युवा थे। 1757 में प्लासी की लड़ाई ने बंगाल को ईस्ट इंडिया कंपनी के हवाले कर दिया था और अँगरेज धीरे-धीरे अन्य भारतीय राज्यों को निगलने की तैयारी में थे। तब तक दादू, कबीर और गुरु नानक हो चुके थे और अंधविश्वासों के विरुद्ध एक माहौल बना हुआ था। समाज संक्रमण की दशा से गुजर रहा था और हिंदू-मुसलमानों में एका की कोशिशें चल रही थी। बर्दमान जिले में 22 मई, 1772 को जन्मे राममोहन ने अपने होश में शिक्षा पद्धति में बदहाली देखी तो बेचैन हो उठे। सदियों से रूढ़ियों की तंद्रा में सोया देश जगे कैसे? शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता थी। राममोहन राय वैज्ञानिक शिक्षा के पक्षधर थे। वे विज्ञान और गणित की शिक्षा तो चाहते थे, पर संस्कृत शिक्षा पद्धति को वे देश को अंधकार की ओर धकेलने का साधन मानते थे। दरअसल, राममोहन संस्कृत शिक्षा के विरोधी न थे बल्कि इसके माध्यम से अंधविशास के प्रचार-प्रसार के विरोधी थे। सच तो यह है कि 1825 में राममोहन ने वेदांत महाविद्यालय खोलकर संस्कृत साहित्य के अध्ययन और हिंदू अद्वैतवाद के पालन और प्रवर्तन की कोशिश की थी। इस संस्था के माध्यम से वे यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान और ईसाई अद्वैतवाद की शिक्षा देने के इच्छुक थे और शिक्षा का माध्यम बंगला या संस्कृत रखा था। 1816 में हिंदू कॉलेज की स्थापना में भी उनका योगदान था। 1822 में अपने खर्चे पर उन्होंने एक हाई इंग्लिश स्कूल आरंभ किया। महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर इस स्कूल के छात्रों में थे। इस स्कूल में विज्ञान विषय बंगला में पढ़ाया जाता था।

1821 में दिसंबर से राममोहन ने बंगला साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन शुरू किया। पत्रिका में लेख लिखकर उन्होंने गरीब हिंदू बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के लिए एक स्कूल की स्थापना का आह्वान किया। इस साप्ताहिक में अकसर वैज्ञानिक विषयों पर लेख छपते थे। राममोहन ने बंगला में व्याकरण, भूगोल, रेखागणित और खगोल शास्त्र पर पाठ्यपुस्तकें लिखीं। यह इतिहाससिद्ध बात है कि भारतीय शिक्षा में विज्ञान का प्रारंभ राममोहन राय के कारण ही हुआ। वे बंगला गद्य के भी जनक थे। सन् 1815 में राममोहन का प्रथम गद्य 'वेदांत ग्रंथ' प्रकाशित हुआ। बंगला गद्य का सही रूप इसमें दिखलाई देता है।

उनके अँगरेजी में जीवनी लेखक सोफी डबसन ने लिखा है– राममोहन इतिहास में एक जीवित पुल की तरह हैं जिस पर से भारत अपने अलिखित इतिहास से भविष्य की ओर जाता है।

हे प्रभु,
मेरे देश की प्रतिज्ञाएँ और आकाँक्षाएँ
कर्म और वचन सत्य हों!

–रवींद्रनाथ टैगोर

जन्म : 7 मई, 1861

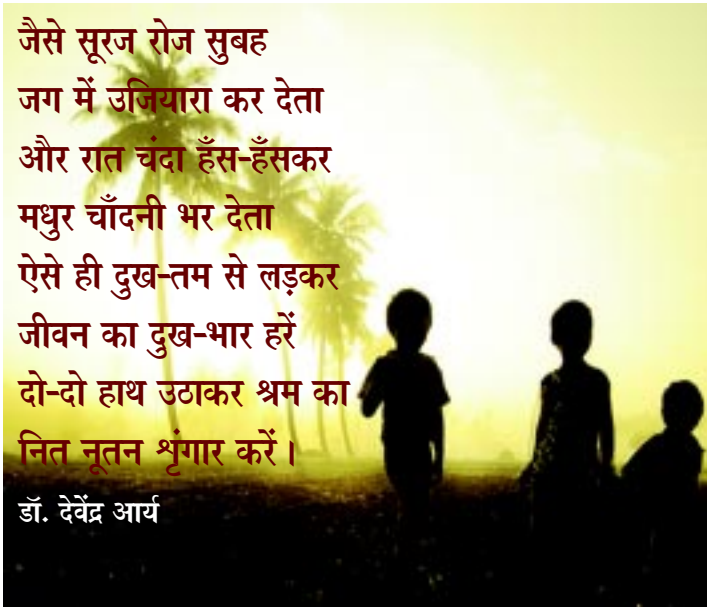

जन्मदिन, 9 मई पर विशेष

गोपाल कृष्ण गोखले : एक आशावादी इंसान

गाँधी जी ने जिन्हें अपना गुरु कहा वैसे राष्ट्रभक्त राजनेता, बुद्धिजीवी और सर्वोपरि एक उत्कृष्ट इंसान गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 9 मई, 1866 को भूतपूर्व बंबई प्रेसीडेंसी के रत्नागिरि जिले के कोतलुक नामक गाँव में हुआ था। गोपाल के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में उन्हें घर पर अथवा स्कूल में दी गई शिक्षा के संबंध में अधिक जानकारी नहीं है। उनकी माँ पढ़ी-लिखी नहीं थीं, उन दिनों के सामाजिक-शैक्षिक हाल को देखते हुए इसमें कोई अचरज की बात भी नहीं थी। परंतु उनमें बुद्धिमत्ता और परंपरागत ज्ञान का कोश भरा था। 1874-75 में अपने भाई के साथ उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने हेतु वे कोल्हापुर आए। जब गोपाल मात्र 13 वर्ष के थे उनके पिता का निधन हो गया। लेकिन उनकी पढ़ाई को जारी रखा गया। प्रतिमास केवल आठ रुपये उन्हें अपने भाई से शिक्षा और भोजन मद में मिलता। भाई गोविंद अपनी मात्र 15 रुपये की मासिक कमाई में से यह रकम उन्हें देते। ऐसी ही आर्थिक बदहाली के विकट दिनों में एक बार अपने एक मित्र के द्वारा नाटक देखने चलने के प्रस्ताव को वे ठुकरा न सके। पर नाटक देखकर आने के बाद मित्र के द्वारा जब नाटक के टिकट के पैसे उनसे माँगे गए तो वे भौंचक रह गए। अगर खर्च की जानकारी उन्हें पहले होती तो वे कतई नाटक देखने न जाते। पर अब इस घाटा की भरपाई कैसे करें? छात्र गोपाल ने अपने लैंप के तेल में बचत करके इसकी क्षतिपूर्ति की। वे गली के लैंप के प्रकाश में पुस्तकें पढ़ते और इस प्रकार उस आठ रुपये में अपना महीना चलाया। गोखले ने कानून की पढ़ाई की थी, पर उन्होंने 15 सालों तक अध्यापकी भी की।

गोखले बालकों के लिए अनिवार्य शिक्षा के हिमायती थे। छह से 10 वर्ष के बीच के बालकों को अनिवार्य शिक्षा का उन्होंने सुझाव दिया। व्यावहारिक कठिनाइयों के आधार पर बालिकाओं को अनिवार्य शिक्षा से छूट की बात उन्होंने कही थी। निरक्षरता के उस दौर में भी साक्षरता के प्रति वे बेहद आग्रही और आशान्वित थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा था :

क्षितिज के पार क्या है, देखने को मैं न कहता,
बढ़ा दो एक पग, संतुष्ट हूँ मैं!

गोखले सार्वजनिक जीवन के आध्यात्मीकरण और शुद्धीकरण के हिमायती थे।

पुण्य तिथि, 27 मई

जवाहरलाल नेहरू : सच्चे मानववादी

1964 में अपने निधन से 20 वर्ष पूर्व, 1944 में नेहरू जी ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लेनिन के शब्दों को कुछ इस तरह उद्धृत किया है : *जीवन मनुष्य के लिए सबसे ज्यादा बहुमूल्य है और यह उसे जीने के लिए केवल एक बार ही दिया जाता है। इसलिए इस प्रकार जीना चाहिए कि मरते समय वह यह कह सके कि 'मैंने अपना पूरा जीवन तथा शक्ति विश्व में एक मुख्य उद्देश्य अर्थात मानवजाति की मुक्ति के लिए न्योछावर की है'।*

जाकिर हुसैन : उत्साही शिक्षाविद्

पुण्य तिथि, 3 मई पर विशेष

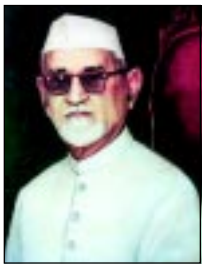

डॉ. जाकिर हुसैन भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे। 1967 (13 मई) से 1969 (मृत्युपर्यंत, 3 मई) तक वे देश के राष्ट्रपति रहे। इससे पूर्व, 1962 में वे उपराष्ट्रपति भी रहे।

8 फरवरी, 1897 को हैदराबाद में पैदा हुए डॉ. हुसैन केवल एक राजनीतिज्ञ ही नहीं, वरन् उच्च कोटि के शिक्षाविद् भी थे। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की स्थापना में उन्होंने योगदान किया था। महात्मा गाँधी के निमंत्रण पर वह प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भी बने। 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य बने। 1956-58 में वह यूनेस्को की कार्यकारी समिति में रहे। 1957 में बिहार के राज्यपाल बने। 1920 में उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना में योगदान किया तथा इसके उपकुलपति बने। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात वे अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के उपकुलपति बने तथा उनकी अध्यक्षता में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' भी गठित किया गया। इसके अलावा, वे भारतीय प्रेस आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आदि से भी जुड़े रहे। 1963 में इनके समस्त योगदानों को सम्मान देने हेतु कृतज्ञ राष्ट्र ने इन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया। 1969 में राष्ट्रपति पद पर रहते हुए इनका असामयिक निधन हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में इनके दिए गए योगदान को राष्ट्र सदैव स्मरण रखेगा।

जन्मदिन, 12 मई पर विशेष

फ्लोरेंस नाइटिंगेल : दीपक वाली महिला

आधुनिक नर्सिंग आंदोलन की जन्मदाता, दया एवं सेवा की प्रतिमूर्ति फ्लोरेंस नाइटिंगेल एक समृद्ध ब्रिटिश परिवार की महिला थीं। उनका जन्म 12 मई, 1820 को हुआ था। जब वह 25 वर्ष की थीं तब उन्होंने अभावग्रस्त व रोगग्रस्त लोगों की सेवा को अपना उद्देश्य बना लिया। उन्होंने चिकित्सा सुविधाओं में सुधार का भी बीड़ा उठाया। फ्लोरेंस का सबसे महत्वपूर्ण सेवा कार्य क्रीमिया के युद्ध के दौरान 1854 में देखने को मिला, जब वह 38 स्त्रियों के एक दल के साथ घायलों की सेवा के लिए तुर्की गईं। रात के गहन अँधेरे में मोमबत्ती की रोशनी में वे घायलों की सेवा करतीं। इसी कारण उन्हें 'द लेडी विद् द लैंप' (दीपक वाली महिला) कहा जाने लगा। इनका जन्मदिन अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1910 में इनका निधन हो गया।

30 मई : हिंदी पत्रकारिता दिवस

हिंदी के पहले साप्ताहिक 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन 30 मई, 1826 को हुआ था।

तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है,
पर इस आँचल से अगर परचम बना लेती तो अच्छा था!

बादल आए–पानी लाए

अनवारे इस्लाम, *भोपाल, म.प्र.*

बादल आए–बादल आए
कितना सारा पानी लाए

बादल भूरे काले हैं
खूब बरसने वाले हैं

शहरों और पहाड़ों पर
सारे जंगल झाड़ों पर

झमक-झमक बरसातें होंगी
हरियाली से बातें होंगी।

श्रम दिवस, 1 मई

हम काम करेंगे

रचना सिद्धा

हम काम से डरेंगे नहीं, काम करेंगे
हम काम करेंगे सभी, हम काम करेंगे।

करेंगे काम में हम अपनी उम्र भी तमाम
जब तक न पूरे काम हों, आराम है हराम
रखेंगे अपने हाथ में ही अपनी हम लगाम
इस देश की तरक्की औ' बहबूदी के लिए
हम काम करेंगे सभी, हम काम करेंगे।

आएगा काम ही हमारी जिंदगी में काम
इस काम से ही जग में अपना ऊँचा होगा नाम
इस काम से ही है जगत में जिंदा सबका नाम
इस नाम को अजर अमर बनाने के लिए
हम काम करेंगे सभी, हम काम करेंगे।

हम काम करेंगे तभी हम नाम करेंगे
हम काम से डरेंगे नहीं, काम करेंगे।

जयपुर, राजस्थान

बन जाए श्रमशील यदि धरा
वैभव से हो हर भवन भरा
तना रहे तन, रहे मन हरा
स्वर्ग बने तब, यह वसुंधरा।

ओमप्रकाश मंजुल, बरेली, उ.प्र.

नए युग की तस्वीर

नरेंद्र

आसमान की ऊँचाई पर आज चढ़ रहे हैं
हम अपनी किस्मत को अपने हाथ गढ़ रहे हैं
काला अक्षर भैंस बराबर अब मत कहना जी
हम अपने नन्हे-मुन्नों के साथ पढ़ रहे हैं
गया जमाना आदम का यह नया जमाना है
नए चौखटे में युग की तस्वीर मढ़ रहे हैं
जाति-धरम का झगड़ा बीते दिन की बातें हैं
भारत नया बनाने को हम साथ बढ़ रहे हैं
अब जाकर हमने जीने का मतलब जाना है
दुनियाभर की बातों को हम आज पढ़ रहे हैं

दरभंगा, बिहार

भाईचारा

रुद्रपाल गुप्त 'सरस'

आओ हम सब सीखें ज्ञान
पढ़-लिख करके बनें महान।

विद्या का अभिमान न हो
किसी गली अज्ञान न हो।

आओ कर लें कुछ ऐसा
गाँधी या नेहरू जैसा।

सबके मन सद्भाव पलें
अब विकास के दीप जलें।

श्रम को गले लगाएँगे
आलस दूर भगाएँगे।

सब अपनाएँ भाईचारा
प्यारा हिंदुस्तान हमारा।

सण्डीला, हरदोई, उ.प्र.

(प्रति वर्ष मई माह का दूसरा रविवार **मदर्स डे** के रूप में मनाया जाता है।)

माँ

सतीश उपाध्याय

पूजा वाली थाली माँ
जीवन की खुशहाली माँ

कोना-कोना रोशन कर दे
है इतनी उजियाली माँ
रंग-रूप से ऊपर है
गोरी हो या काली माँ

हम हैं फूल सरीखे बच्चे
और बगिया की माली माँ
पथरीली राहों में हरदम
पग-पग हमें सँभाली माँ

हर पल रखती ध्यान हमारा
रहे कभी न खाली माँ
हम तूफानों से लड़ते हैं
हिम्मत देने वाली माँ

देख हमारी मुस्कानों को
जैसे सब कुछ पा ली माँ
है पावन-त्योहार सरीखी
होली और दिवाली माँ।

मनेंद्रगढ़, कोरिया, छत्तीसगढ़

पढ़ना बहुत जरूरी

मुकुंद कौशल

जेठ में जैसे धूप जरूरी, पानी ज्यों चौमास में
वैसे पढ़ना बहुत जरूरी, अपने पूर्ण विकास में।

गाँव कबीले जाग चुके हैं आगे यहाँ किसान सभी
रात गई अब हुआ सबेरा हों पूरे अरमान सभी
बाती-तेल जरूरी जैसे, दीपक और प्रकाश में
वैसे पढ़ना बहुत जरूरी, अपने पूर्ण विकास में।

अगर न समझे मूल्य समय का तो साधन कर सकते क्या
ज्ञान बिना पशुवत् है मानव ज्ञान बिना यह जीवन क्या
जीने को है साँस जरूरी, हवा जरूरी साँस में
वैसे पढ़ना बहुत जरूरी, अपने पूर्ण विकास में।

शब्द हमारे सुख के साथी सब मिलजुल कर पढ़ें-बढ़ें
जैसे भोजन बिना स्वाद का वैसे जीवन बिना पढ़े
खट्टापन जैसे अचार में, गुड़ जैसे मिठास में
वैसे पढ़ना बहुत जरूरी, अपने पूर्ण विकास में।

दुर्ग, छत्तीसगढ़

मुन्नी बस्ता लेकर आई

डॉ. अपर्णा शर्मा

मुन्नी बस्ता लेकर आई
रंग-बिरंगी पुस्तक लाई
दादी की तबियत ललचाई
शुरू हुई उनकी भी पढ़ाई
साग-पात और दाल-भात से
आगे बढ़कर थोड़ा पढ़कर
लिखना सीख रही हैं अब वे
फल सब्जी और मिठाई
कोयल, कौआ, मोर, कबूतर
बाज, तीतर, मिठ्ठू भाई
मुन्नी जैसी करें लिखाई
मुन्नी जैसी करें पढ़ाई।

इलाहाबाद, उ.प्र.

जीवन उन्नायक है पुस्तक
भव पथ सुखदायक है पुस्तक
दुख सने द्वंदवात्मक जग में
सिद्ध मंत्र गायक है पुस्तक।

डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, कोटा, राजस्थान

बाँटने से बढ़ता
ऐसा है ज्ञान
शिक्षित को मिलता
हर जगह सम्मान।

सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

जीवन के उलझे रहस्य को
पुस्तक ही सुलझा पाती है
कितना है इतिहास हमारा
पुस्तक ही बतला पाती है।

विश्वप्रताप भारती, अलीगढ़, उ.प्र.

भरो मुट्ठी में
पढ़-लिख के तुम
ये आसमान।

डॉ. राकेश अग्रवाल, हापुड़, उ.प्र.

ग्रंथ से बड़ा
न मित्र होता कोई
सुख-दुख में।

नलिनीकांत, अंडाल, प. बंगाल

दुनिया को बदलने का जादू है किताब, चलो किताब पढ़ें! — **दीपक गुप्ता,** *ने.बु.ट्र.*

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : अप्रैल 2012 :** आठ पृष्ठों की छोटी-सी पत्रिका में आपने बहुत कुछ समाहित करने का सफल प्रयास किया है। पत्रिका नवसाक्षरों के लिए तो उपयोगी है ही, सामान्य पाठक को भी बहुत कुछ जानकारी देती है। पुस्तकों के महत्व को रेखांकित करता यह अंक बहुत संतुलित है। **हरिशंकर राढ़ी,** महरौली, नई दिल्ली

☐ साक्षरता प्रसार के अपने अभियान में आप उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त करें, मेरी शुभकामनाएँ! **डॉ. योगेश कुमार निर्भीक,** मथुरा, उ.प्र.

☐ **सा. सं. : मार्च 2012 :** काव्यमयी प्रस्तुति के अंतर्गत सभी कविताएँ एक से बढ़कर एक है। शेष सामग्री भी अच्छी लगी।
किशन लाल शर्मा, आगरा, उ.प्र.

☐ मात्र आठ पृष्ठों में आपने बेटियों के पढ़ने-लिखने तथा आगे बढ़ने और उनकी क्षमताओं की बहुत सुंदर प्रस्तुति की है। बेटियों पर रचनाएँ वस्तुतः अलख जगाने वाली रचनाएँ हैं। लघु आलेख उपयोगी हैं। **सा. सं.** का संपादन, प्रस्तुति एवं चयन दृष्टि सदैव ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक रही है। आप नारों का बहुत सुंदर उपयोग करते हैं। **रूपनारायण काबरा,** जयपुर, राजस्थान

☐ **सा. सं.** अनवरत पढ़ रहा हूँ। इतने कम स्पेस में इतनी पठनीय सामग्री संयोजित करना वाकई जोखिम भरा काम है। मगर आप जिस खूबी और काबिलियत से चीजों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं वह न केवल काबिलेतारीफ है बल्कि स्तुत्य भी है। इत्ती-सी पत्रिका और इतनी सारी सूचनाएँ! कमाल ही नहीं, धमाल भी है। बधाई स्वीकारें। **नरेंद्र,** दरभंगा, बिहार

☐ **सा. संवाद** मार्च अंक में साक्षर भारत यात्रा संबंधी खबर में संशोधन सूचित करना चाहता हूँ–साक्षर भारत यात्रा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के सहयोग से **भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा संचालित** की गई।
प्रमोद तिवारी, भा.ज्ञा.वि.स.–उत्तराखंड, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

☐ सावित्रीबाई फुले पर सामग्री का प्रकाशन **सा. सं.** के पाठकों को अनुपम उपहार है। भारतीय इतिहास के प्रेरक व्यक्तित्व को प्रकाश में लाकर आप अच्छा काम कर रहे हैं। एक मुक्तक प्रस्तुत कर रहा हूँ : जो बीनती थीं खेतों में चने की घेंटियाँ
वो आज पढ़ रही हैं मेरे गाँव की बेटियाँ
चूल्हा-चौका को सजा हाथ में पुस्तक उठा
गढ़ रही हैं कसीदे नए, गाँव की बेटियाँ।
कृष्णदेव चतुर्वेदी, भोपाल, म.प्र.

☐ प्रस्तुत अंक में बेटियों पर अच्छी रचनाएँ पढ़ने को मिलीं। बधाई।
संदीप 'सृजन', उज्जैन, म.प्र.

☐ घर के सभी सदस्यों को **सा. सं.** के हर अगले अंक की प्रतीक्षा रहती है। महान समाज सुधारक जोतिबा फुले की सुपत्नी सावित्रीबाई फुले के शिक्षा एवं समाज के क्षेत्र में दिए गए अवदान को याद कर आपने उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है।
दुर्गा प्रसाद शर्मा, बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आधारित विशेषांक बेहतरीन लगा। कविताएँ उत्कृष्ट एवं दिल को छूने वाली हैं। पत्रिका छोटी ही सही, पर विशेष है–प्रेरणादायी, संदेशपरक। पाठकों के लिए यह अनुपम उपहार है। **डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष',** चेन्नई, तमिलनाडु

☐ महिला दिवस पर आधारित प्रस्तुत अंक अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। **सा. सं.** अपनी प्रेरक रचनाओं से दिनोंदिन निखरता जा रहा है, एतदर्थ संपादक को बधाई।
डॉ. युगल डोगरा, धर्मशाला, हि.प्र.

☐ फरवरी अंक पढ़कर 20वें विश्व पुस्तक मेले के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। मातृभाषा दिवस पर प्रस्तुत आलेख उपयोगी लगा। नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पाठकों में पठन रुचि पैदा करती है। **डॉ. प्रीतपाल सिंह महरोक,** होशियारपुर, पंजाब

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। **–संपा.**

नुक्कड़गीत बनाम साक्षरता

डॉ. राजेन्द्र मिलन, *आगरा, उ.प्र.*

खाना-पीना मजे उड़ाना
खासम-खास जरूरी जी
पर पढ़ने से पिंड छुड़ाना
काहे की मजबूरी जी?

पढ़ना-लिखना माथा पच्ची
हमें न भाए साहिब जी
बिना पढ़े सब काम बन गए
अब क्या चाहिए साहिब जी
छै-छै बच्चे घर में खेलें
सुर्ख पड़ी कस्तूरी जी

हाँ-हाँ भैया सच कहते हो
संतों की मृदुवाणी जी
गुल्ली-डंडा, आँख-मिचौनी
भंग मजे से छानी जी
मानुस जौन, चिड़ी-पशुअन में
कुछ तो फर्क लटूरी जी

जीवन का मकसद है भैया
संघर्षों से लड़ना जी
बचपन हो या उम्र हो पचपन
अच्छा लिखना-पढ़ना जी
घर की चिठिया बाँचे 'कोई'
'भाग गई अंगूरी जी'

कारीगर हो या किसान जी
या करते मजदूरी जी
नंबर वन तुम हुनरमंद पर
अक्षर ज्ञान जरूरी जी
काला अक्षर भैंस बराबर
मिलनी नहीं हुजूरी जी

रहन रखो या कर्जा माँगो
रंगना पड़े अँगूठा जी
बिटिया की शादी की खातिर
खेत बिके संग खूँटा जी
पढ़े-लिखे को सूदखोर भी
इज्जत देते पूरी जी

हमने देखे अनपढ़मल जी
ठाट-बाट में अक्कड़ जी
इक दिन उनकी पोल खुली जी
निकले कोरे फक्कड़ जी
बगुला नहीं हंस हो सकता
उस्तादी धत् तेरी जी
फिर पढ़ने से पिंड छुड़ाना
काहे की मजबूरी जी?

बनो साक्षर

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

बनो साक्षर, बनो साक्षर
रहे न कोई कहीं निरक्षर
शिक्षा से रोशन हो हर घर
अंधकार हो नहीं कहीं पर
जहाँ अशिक्षा वहाँ निरादर
आदर तो पाता है साक्षर
भाग्यहीनता तुरत बदलकर
भाग्यवान बनाता है अक्षर
नारा यही लेंगे जीवनभर
बनो साक्षर, बनो साक्षर।

लखनऊ, उ.प्र.

साक्षरता अभियान

डॉ. योगेश कुमार 'निर्भीक'

सब अक्षर संसार अक्षरा का
जगत में उत्तम ज्ञान अक्षरों का
उन्नति पथ शिक्षा का दिखलाओ
सबसे अच्छा दान अक्षरों का
अभियान साक्षरता का प्यारा
घर-घर में फैले उजियारा
छँटे अज्ञान तम बंधन कटें
सर्व शिक्षा है मंत्र हमारा
हम राष्ट्र का अज्ञान मिटाएँ
पढ़ें-लिखें विद्वान बनाएँ
शिक्षा उन्नति का पथ अपनाएँ
शोषण मुक्त घर समाज बनाएँ
सीखें हर भाषा विज्ञान हम
कंम्यूटर गणित का ज्ञान जम
जलाएँ शिक्षा दीपों को मिल
पीछे न किसी से रहें हम।

मथुरा, उ.प्र.

अक्षर ज्ञान

डॉ. अंजना अनिल

नित नूतन अहसास संजोकर
दृढ़ संकल्प जगाएँ
दूर करें तम हर मानस का
अक्षर ज्ञान जगाएँ
सुप्त नहीं अस्तित्व हमारा
यह सत्य हम जानें
आओ, खुद को हम पहचानें।

अलवर, राजस्थान

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/05/2012

प्रेरक प्रसंग

सब पढ़े, सब बढ़े

दिल में जोश हो, जज्बा हो और जिद हो तो कुछ भी असंभव नहीं। असम के जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा की रौशनी फैलाने में लगा एक गुमनाम-सा व्यक्ति आज शिक्षा जगत का एक प्रेरक व्यक्तित्व बन गया है। क्षेत्र के बच्चों को जब उसने धूल में लोटते और गलियों में भटकते देखा तो उसके मन में एक स्कूल खोलने का विचार आया। मात्र 800/- रुपये में खोले गए स्कूल में शुरू में केवल 5 बच्चों ने दाखिला लिया। लेकिन धुन के पक्के उस व्यक्ति, उत्तम टेरॉन, ने अपने खोले स्कूल, पारिजात एकेडमी, को बच्चों से भर देने का निश्चय किया। फिर क्या था! वह घूम-घूमकर क्षेत्र में अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल में दाखिला कराने की प्रेरणा देने लगा। टेरॉन को कठिनाइयाँ आईं, और बहुत आईं। पैसे की कमी, किताबों की कमी, छात्रों की कमी एवं और भी अन्य समस्याएँ। लेकिन सहयोग के हाथ भी बढ़े। मुफ्त पढ़ाने के लिए पढ़े-लिखे लोग सामने आए, स्कूल में कक्षाएँ बढ़ीं और छात्र भी। आज 10वीं कक्षा तक पढ़ने वाले कुल 508 छात्र-छात्राएँ उस स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। स्कूल में एक बढ़िया पुस्तकालय भी बन गया है। अपने क्षेत्र और क्षेत्र से आगे भी नई राह दिखा रहा है यह स्कूल। स्कूल के संस्थापक का एक ही लक्ष्य है—सब पढ़े, सब बढ़े!

ने.बु. ट्रस्ट की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें

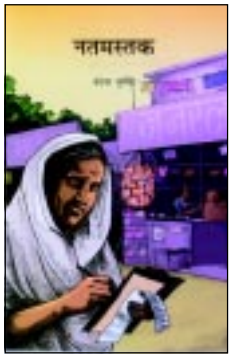

ले.: वंदना पुष्पेंद्र

ले.: पुष्पा सिंह 'विसेन'

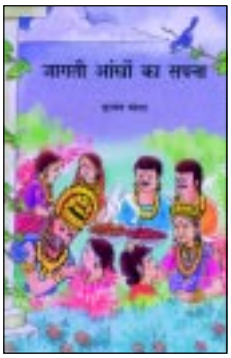

ले.: कुलवंत कोछड़

ले.: गोविंद मिश्र

ले.: डॉ. यतीश अग्रवाल

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070